अध्याय 35

निवासस्थान निर्माण की तैयारी

अध्याय 35 से (अध्याय 35-40) निर्गमन की पुस्तक का एक भाग शुरू होता है।[1] इस समय तक, इस्राएलियों ने पाप किया था, उन्हें दण्ड दिया गया था, और फिर से नया किया गया था। मूसा दूसरी बार चालीस दिन तक परमेश्वर की व्यवस्था को प्राप्त करने के लिये पर्वत पर वापस चला गया था। वापस आने पर, जब पहली बार चालीस दिनों के बाद वह पर्वत से उतर आया था, तब उसने जो कुछ वह करना चाहता था उसे पूरा करने के लिये लोगों को "इकट्ठा" किया: उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था को पुन: प्रदान करने के लिये जो उसने सीनै पर प्राप्त किया था (अध्याय 25-31), विशेष रूप से तम्बू की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में। निर्गमन 35 और 36 से संकेत मिलता है कि उसने तम्बू निर्माण की आज्ञा के साथ-साथ उसके निर्माण के निर्देशों को जो उसने प्राप्त किया था उन्हें दिया।

क्योंकि निवास के निर्माण का विवरण लगभग इसके निर्माण के निर्देशों के शब्दों को दोहराता है, कई विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है कि इस भाग को किसी अन्य लेखक द्वारा बाद में जोड़ा जाना चाहिए था। अम्बर्टो कासू ने विरोध जताया,

> परन्तु, यह अनुमान प्राचीन पूर्व में पुस्तकों की रचना में नियोजित तरीकों के अज्ञान पर आधारित है। पूर्वी देशों के शुरुआती लेखों में एक मन्दिर की स्थापना और निर्माण का विषय एक रूढ़िबद्ध साहित्यिक श्रेणी था; और इस तरह के लिखित खण्डों के लिये सामान्य रूप से सबसे पहले कम से कम विवरण में पवित्र स्थान की योजना का वर्णन करने वाले दैवीय कथन को दर्ज करना था, और उसके बाद निर्माण का विवरण देने के लिये, जो दैवीय विचारों के आदान-प्रदान में दिए गए विवरण के समरूप या समान शब्दों में दोहराया जाता था।[2]

जैसा कि इस्राएल ने निर्माण के कार्य को शुरू करने की तैयारी की, मूसा ने परमेश्वर के निर्देशों को देने के लिये लोगों को एक साथ इकट्ठा किया। किसी कार्य को करने की परिस्थितियों के बारे में, मूसा ने कहा कि परमेश्वर ने सब्त के दिन काम करने के लिये लोगों को मना किया (35:1-3) था। भवन निर्माण सामग्री प्राप्त करने के लिये, उसने संकेत दिया कि परमेश्वर चाहता है कि वे इस्राएली अपनी इच्छा से भेंट करें (35:4-9)। तब लोगों को तम्बू के लिए समग्र योजना का एक पूर्वावलोकन दिया गया था जिसका निर्माण किया जाएगा (35:10-19)। लोग सभा को छोड़कर गए और योगदान करना शुरू कर दिया, जिसके

परिणामस्वरूप निर्माण सामग्री उपलब्ध कराई गई (35:20-29)। निर्माण पर्यवेक्षक ले रूप में बसलेल और ओहोलीआब का उसके सहायक के रूप में नियुक्ति (35:30-35) के साथ अध्याय का अन्त होता है।

सब्त की आज्ञा (35:1-3)

[1]मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा करके उनसे कहा, "जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं। [2]छ: दिन तो काम-काज किया जाए, परन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे लिये पवित्र और यहोवा के लिये परमविश्राम का दिन ठहरे; उसमें जो कोई काम-काज करे वह मार डाला जाए; [3]वरन् विश्राम के दिन तुम अपने अपने घरों में आग तक न जलाना।"

आयत 1. परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशन को प्रस्तुत करने के लिये, **मूसा** ने लोगों को एक विशेष सभा में बुलाया तब उसने व्यवस्था की अपनी प्रस्तुति यह कहते हुए शुरू किया **"जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वे ये हैं।"**

आयतें 2, 3. फिर, उसने **विश्रामदिन** का पालन करने की आवश्यकता को प्रस्तुत किया। इस प्रकार, निर्गमन की पुस्तक छठवीं बार इस आज्ञा के बारे में बताता है कि इस्राएल को विश्रामदिन का पालन करना चाहिए (16:4, 5, 23-29; 20:8-11; 23:10-12; 31:12-17; 34:21; 35:1-3)। इतना कह सकते हैं कि, मूल पाठकों को यहोवा के इस आज्ञा को मानने के महत्व से प्रभावित होना चाहिए था। इस संदर्भ में, यह दोहराया गया हो सकता है क्योंकि इस्राएलियों की अगली जिम्मेदारी तम्बू का निर्माण करना था। शायद मण्डली को स्मरण कराया गया हो कि वे परमेश्वर के घर का निर्माण करने के लिये तैयार किए गए थे कि वे उसे करने में परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं तोड़ सकते थे। उन्हें तम्बू को बनाने के लिये काम करना था, परन्तु उन्हें सब्त के दिन काम करना नहीं था।

यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि विश्रामदिन को मानने की आज्ञा अन्तिम आज्ञा थी जो इस्राएल के अपने धर्म के विरुद्ध जाने से पहले दिया गया था, जिसे मूसा के पर्वत से उतर आने के थोड़े समय पहले दिया गया था (31:12-17), और मूसा के दूसरी बार पर्वत से उतर आने के थोड़े समय के बाद, इस्राएल के नए किए जाने के बाद दी गई पहली आज्ञा थी (35:1-3)। इस्राएल की मूर्तिपूजा की कहानी से सब्त आज्ञा के इन दोनों अध्यायों की आयतों के बीच की कड़ी को जोड़ा गया है।

35:2, 3 में जोर दो तथ्यों पर है। सबसे पहले, सब्त का दिन **यहोवा के लिये परमविश्राम** ("पवित्र विश्राम") का दिन ठहराया जाना था यहाँ तक कि उन्हें **वरन् विश्राम के दिन** [वे] **अपने अपने घरों में आग तक न जलाना** कहा गया था। "आग जलाना" जिससे एक उदाहरण के रूप में कार्य करने की इच्छा को जताया जा सकता है। यहाँ तक कि छोटे से छोटा काम "आग जलाना" के लिये आवश्यक था, विश्रामदिन में जिन्हें करने की आज्ञा नहीं थी। इसलिये, किसी भी अन्य काम, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, उसे भी मना किया गया था।

दूसरा, विश्राम के दिन को न मानने का दण्ड **मार डाला** जाना था (देखें 31:14, 15)। जबकि आधुनिक पाठकों को लगता है कि विश्राम के दिन को न मानना एक घोर अपराध नहीं होना चाहिए, उन्हें यह स्मरण रखना अच्छा होगा कि उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करने के लिये दण्ड निर्धारित करने का अधिकार परमेश्वर के पास है। स्पष्ट है, परमेश्वर की दृष्टि में, एक इस्राएली जो सब्त आज्ञा का पालन करने से इनकार करता था वह बहुत विद्रोही था उसके समान जो किसी अन्य देवता की उपासना करता था। पीटर एन्स ने लिखा कि जिस प्रकार तम्बू "पवित्र स्थान" था, वैसे ही सब्त एक "पवित्र समय" था।[3] किसी को भी समय या स्थान को अपवित्र नहीं करना चाहिए जिसे परमेश्वर ने पवित्र किया है।

भेंट देने के लिये बुलाहट (35:4-9)

[4]फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहा, "जिस बात की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है। [5]तुम्हारे पास से यहोवा के लिये भेंट ली जाए, अर्थात् जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा की भेंट करके ये वस्तुएँ ले आएँ; अर्थात् सोना, चाँदी, पीतल; [6]नीले, बैंजनी और लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा; बकरी का बाल, [7]लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, सूइसों की खालें; बबूल की लकड़ी, [8]उजियाला देने के लिये तेल, अभिषेक का तेल और धूप के लिये सुगन्धद्रव्य, [9]फिर एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि और जड़ने के लिये मणि।

आयतें 4-9. जब लोग अपनी इच्छा से भेंट देने (25:1-7) की परमेश्वर की बुलाहट को ध्यान में रखते हुए एकसाथ इकट्ठा किए गए, तो **मूसा** ने **मण्डली** से कहा कि **यहोवा** ने उन वस्तुओं को अपनी इच्छा से **देने** की मांग की थी जिनके द्वारा तम्बू का निर्माण किया जाएगा। कीमती धातुओं (सोना, चाँदी और पीतल) और विभिन्न प्रकार के कपड़ों (**सूक्ष्म सनी का कपड़ा, मेढ़ों की खालें, और सूइसों की खालें**) की आवश्यकता थी। सूची में **बबूल की लकड़ी**, **तेल**, **सुगन्धद्रव्य**, और याजक के वस्त्रों के लिये **मणि** (देखें टिप्पणी 25:1-7 पर) शामिल हैं। भेंट के लिये इस बुलाहट के परिणाम 35:21-29 और 36:1-7 में बताए गए हैं।

निवास-स्थान के निर्माण की विभिन्न वस्तुएँ (35:10-19)

[10]"तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने दी है वे सब बनाएँ। [11]अर्थात् तम्बू, और आवरण समेत निवास, और उस की घुंडी, तख़्ते, बेंड़े, खम्भे और कुर्सियाँ; [12]फिर डण्डों समेत सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना, और बीचवाला परदा; [13]डण्डों और सब सामान समेत मेज़, और भेंट की रोटियाँ; [14]सामान और दीपकों समेत उजियाला देनेवाला दीवट, और उजियाला देने के लिये तेल; [15]डण्डों समेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल, सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का परदा; [16]पीतल की झंझरी, डण्डों आदि

सारे सामान समेत होमवेदी, पाए समेत हौदी; [17]खम्भों और उनकी कुर्सियों समेत आँगन के परदे, और आँगन के द्वार के परदे; [18]निवास और आँगन दोनों के खूँटे, और डोरियाँ; [19]पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये काढ़े हुए वस्त्र, और याजक का काम करने के लिये हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र।"

आयत 10. मूसा ने मण्डली को परमेश्वर द्वारा बताए गए कार्य को पूरा करने के लिये चुनौती दी। इस आयत में कही गई बात शेष अध्याय और अगले तीन अध्यायों में एक प्रस्तावना के रूप में कार्य करता है। मूसा ने कहा था कि निर्माण का कार्य किसे करना था - **तुम में से जितनों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश है** - और उन्हें क्या बनाना था - **जिस जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने दी है वे सब बनाएँ।** वस्तुओं की पूर्ति के अनुसार, निर्माण के लिये श्रम स्वयं सेवक के आधार पर दिया जाना था। वास्तविक निर्माण के लिये बुलाए गए लोग "निपुण" कार्यकर्ता थे। स्पष्ट है, जबकि इस्राएल अपनी भौतिक वस्तुओं का योगदान उदारता से करना चाहते थे, उन्हें भी सफलतापूर्वक इस परियोजना को पूरा करने के लिये अपना समय देना था और अपनी प्रतिभाओं को काम में लाना था। तम्बू के निर्माण के बाद, निर्गमन कहता है कि इस्राएल ने वास्तव में वैसा ही किया "जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी" (39:32, 42)।

आयतें 11-19. मूसा ने न केवल संकेत किया कि जिस जिस वस्तु की आज्ञा यहोवा ने इस्राएल को दिया था उन्हें बनाना था, परन्तु उसने यह भी दोहराया कि परमेश्वर उनसे चाहता था कि वे उन्हें बनाएँ। 11 से 19 आयत विभिन्न वस्तुओं को सूचीबद्ध करते हुए जिन्हें इस्राएल को बनाना था तम्बू के वास्तविक निर्माण का विवरण प्रस्तुत करते हैं:

1. **निवासस्थान** अर्थात् **तम्बू** (35:11)
2. वाचा का **सन्दूक** (35:12)
3. **प्रायश्चित्त का ढकना** (35:12)
4. **बीचवाला परदा** (35:12)
5. रखी जाने वाली बारह रोटियों का **मेज़** (35:13)
6. **उजियाला देनेवाला दीवट** (35:14)
7. **धूपवेदी** (35:15)
8. **अभिषेक का तेल और सुगन्धित धूप** (35:15)
9. तम्बू के **निवास** के **द्वार का परदा** (35:15)
10. **होमवेदी** (35:16)
11. **आँगन** (35:17, 18)
12. याजक के **पवित्र वस्त्र** (35:19)।

अध्याय 25 से 31 में इन सभी वस्तुओं को बनाने के लिये मूसा को दिए गए निर्देश हैं, और अध्याय 36 से 39 में बताया गया है कि उन्हें किस प्रकार बनाया गया था। लेख यह भी बताता है कि इस्राएल ने वह सब कुछ बनाया जिसकी आज्ञा

यहोवा ने दी थी जिस जिस वस्तु को बनाया गया था, कार्य समाप्त होने के बाद उनकी सूची 39:32-41 में दिया गया है।

अपनी इच्छा से भेंट देना (35:20-29)

[20]तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा के सामने से लौट गई। [21]और जितनों को उत्साह हुआ और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी सारी सेवा और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे। [22]क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, नथनी, मुंदरी, और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भाँति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए। [23]और जिस जिस पुरुष के पास नीले, बैंजनी या लाल रंग का कपड़ा, या सूक्ष्म सनी का कपड़ा, या बकरी का बाल, या लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालें, या सूइसों की खालें थीं वे उन्हें ले आए। [24]फिर जितने चाँदी, या पीतल की भेंट के देनेवाले थे वे यहोवा के लिये वैसी भेंट ले आए; और जिस जिसके पास सेवा के किसी काम के लिये बबूल की लकड़ी थी वे उसे ले आए। [25]और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत कात कातकर नीले, बैंजनी और लाल रंग के, और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले आईं। [26]जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्होंने बकरी के बाल भी काते। [27]और प्रधान लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि, और जड़ने के लिये मणि, [28]और उजियाला देने और अभिषेक और धूप के सुगन्धद्रव्य और तेल ले आये। [29]जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसके लिये जो कुछ आवश्यक था, उसे वे सब पुरुष और स्त्रियाँ ले आईं, जिनके हृदय में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी। इस प्रकार इस्राएली यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आए।

आयत 20. मूसा की देने के लिये बुलाहट का परिणाम एक उदारता का भेंट था। निवासस्थान के निर्माण के लिये दान के अनुरोध के बाद, सारी **मण्डली मूसा के सामने से लौट गई**। सभा को समाप्त कर दिया गया था और प्रत्येक स्त्री और पुरुष अपने अपने तम्बू में चले गए सब को एकसाथ इकट्ठा करने के लिये कि वह क्या कितना दे सकता था या दे सकती थी।

आयतें 21-28. इस्राएलियों का "मूसा के सामने से लौट जाने के बाद" वे **आए और यहोवा की भेंट ले आने लगे**। इब्रानी में, आयत 21 और 22 दोनों "और वे आए" (וַיָּבֹאוּ, *वाययाबोऔ*) के साथ शुरू होते हैं। कैसूटो ने कहा कि भाषा इस्राएल की प्रतिक्रिया की तीव्रता का सुझाव देती है। उन्होंने टिप्पणी की, "जैसे ही मूसा ने अपना सम्बोधन समाप्त किया, वे अपनी-अपनी भेंट को लाने के लिये चले गए, और तुरन्त अपनी-अपनी भेंटों के साथ वापस आए।"[4]

मूसा ने कहा था कि "जितने अपनी इच्छा से चाहें" (35:5) उन्हें देना था। तब

लेख कहता है कि **जितनों को उत्साह हुआ**, और **जितनों को उनके मन ने** और **जितनों के आत्मा में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई** थी उन्हें देना था। तब भेंट अपनी इच्छापूर्वक, उत्साहपूर्वक, प्रसन्नता से, बाहरी दबाव से नहीं बल्कि आन्तरिक लालसा से प्रेरित होने पर दी गई थी। यदि कोई पुराना नियम की व्यवस्था के बारे में सोचकर संकट में पड़ जाता है और उन लोगों के बारे में जो इसके तहत हानि के डर से पूरी तरह से भ्रमित हो जाते हैं, तो उसे निवासस्थान के लिये इस्राएलियों की अपनी इच्छा से देने में भागीदारी पर विचार करना चाहिए।

आयत 22 में शब्द "सब" विशेष रूप से **स्त्रियों** को शामिल करता है, जिन्होंने पुरुषों के साथ, अपने सोने के गहने (35:22) दे दिए। जिन "स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश" था उन्होंने भी वस्तुओं को तैयार किया (35:25, 26) क्योंकि इस कार्य में दिया जाना था। स्त्रियाँ देने में रूचि रखती थीं, और उन्होंने इसे दिया। यह एक योगदान था जिसमें "सब" भाग ले सकते थे और उन्होंने लिया।

जो लोग भेंट लाए थे और जिन वस्तुओं को लाए थे उन्हें नीचे दिए गए चार्ट में संक्षेप में दिया गया है। परिणाम यह था कि परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के भौतिक वस्तुओं को लाने के लिये कहा जिन्हें दिया गया (देखें 35:5-9)।

जिन्होंने दिया	भेंट	पवित्रशास्त्र
पुरुष और स्त्री	सोने के गहने	35:22
पुरुष	विभिन्न रंग के कपड़े और खालें	35:23
हर कोई	चाँदी और पीतल	35:24
हर पुरुष	बबूल की लकड़ी	35:24
स्त्री	सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत	35:25, 26
प्रधान लोग	मणि, सुगन्धद्रव्य और तेल	35:27, 28

आयत 29. लेखक ने एक संक्षिप्त वाक्य के साथ इस अनुच्छेद को समाप्त किया है: **इस प्रकार इस्राएली ... यहोवा के लिये अपनी ही इच्छा से भेंट ले आए।** परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति उनकी आज्ञाकारिता और गर्मजोश उदारता को विशेष रुप से प्रकट किया गया।

सम्भावित रूप से एक प्रश्न इस प्रकार पूछा जा सकता है: इस्राएली इतने उदार क्यों बन गए? जो कोई उनकी कहानी जानता है वह यह भी जानता है कि इस बिन्दु तक वे भुलक्कड़, कृतघ्न और विद्रोही रहे हैं। फ़िर, अचानक से परमेश्वर के लिए भेंटें देने के लिए वे इतने उदार और दानी क्यों बन गए? सम्भावित रूप से इसका उत्तर उनके पिछले अनुभव में छिपा हुआ है। उन्होंने परमेश्वर के विरोध में विद्रोह किया और इसके लिए उन्हें दण्ड मिला। अत्यधिक विशेष रूप में देखने पर परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी कि वह उन्हें पूरी तरह से छोड़ देगा। जैसा देखा

जा सकता है कि वे पूरी तरह से नरक के निकट थे और बड़ी कठिनाई से ही इसकी आग की लपटों से बच पाए थे। यहाँ तक कि जब परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया और इसके बाद भी उसने उन्हें चेतावनी दी कि वह अपनी उपस्थिति को उनसे छीन लेगा। फ़िर भी उसने उनके सम्मुख एक अनुग्रहकारी प्रस्ताव रखा: तुरन्त प्रभाव से उसने कहा कि अगर वे उसके लिए एक घर बनाएंगे तो वह उनके साथ रहेगा। तब इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि वे आनन्द के साथ भेंटें लाए! जैसा कि लोगों को नरक के जबड़ों से छीन लिया गया और उनसे स्वर्ग का वायदा किया गया, ऐसे लोगों को उपयुक्त रूप से चाहिए कि वे कृतज्ञ और उदार बनें।

निर्माण निरीक्षक (35:30-35)

30तब मूसा ने इस्राएलियों से कहा, "सुनो, यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है, नाम लेकर बुलाया है; 31और उसने उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला है 32कि वह कारीगरी की युक्तियाँ निकालकर सोने, चाँदी और पीतल में, 33और जड़ने के लिये मणि काटने में और लकड़ी पर नक्काशी करने में, वरन् बुद्धि से सब भाँति की निकाली हुई बनावट में काम कर सके। 34फिर यहोवा ने उसके मन में और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की शक्ति दी है। 35इन दोनों के हृदय को यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है कि वे नक्काशी करने और गढ़ने वाले और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में काढ़ने और बुनने वाले हों, वरन् सब प्रकार की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने में सब भाँति के काम करें।"

आयत 30. परमेश्वर ने पवित्रस्थान के निर्माण के विषय में **मूसा** को दिए हुए निर्देशों की समाप्ति उन लोगों के नाम देते हुए की जिन्हें इसके निर्माण में अगुवाई देनी थी (31:1-6 पर टिप्पणी देखें)। जैसे ही निर्माण का काम आरम्भ होने पर था वैसे ही मूसा ने परमेश्वर के शब्दों को लोगों के सम्मुख यह कहते हुए दोहरा दिया कि सम्पूर्ण काम **बसलेल** की देख-रेख में होगा (देखें 36:1, 2; 37:1; 38:22, 23)।

आयत 31. इस काम के लिए बसलेल योग्य था क्योंकि वह एक गुणी और प्रतिभावान कारीगर था जो इस परियोजना की समाप्ति के लिए आवश्यक सब क्षेत्रों में काम करने के लिए बुद्धि से परिपूर्ण था। फ़िर भी उसके गुण उसकी स्वयं की क्षमता से नहीं थे; इसके स्थान पर ये उसे **परमेश्वर के आत्मा** से प्राप्त हुए थे जिसने उसे **बुद्धि, समझ, और ज्ञान** प्रदान किया और **कारीगरी की सब युक्तियों में** योग्यता प्रदान की। "परमेश्वर के आत्मा" की **भरपूरी** ने बसलेल को वह सब कुछ करने की सामर्थ दी जो उसने किया।

आयतें 32-35. बसलेल की सहायता करने के लिए **ओहोलीआब** था और उसे भी परमेश्वर ने योग्य बनाया था। ऊपरी तौर पर उनके काम में तीन चीज़ें शामिल

थी: (1) कारीगरी का काम करना - वास्तव में पवित्रस्थान की कुछ चीज़ें तैयार करना। (2) **शिक्षा देना** - अन्य लोगों को वह कुशल कार्य करना सिखाना जिसे वे कर सकते थे।[5] (3) कार्य का निरीक्षण करना। सम्भावित रूप से अधिकतर काम अन्य लोगों के द्वारा कर दिया गया था (देखें 35:10; 36:1, 8)। बसलेल और ओहोलीआब का कार्य यह था कि वे सुनिश्चय करें कि कार्य सही प्रकार से किया जाए और जब तक काम पूरा न हो जाए तब तक उसका निरीक्षण करते रहें। जैसा उन्होंने निर्माण कार्य का निरीक्षण किया था, बसलेल (जिसके साथ ओहोलीआब सहायक के रुप में था) के लिए ऐसा कहा गया कि "परमेश्वर ने मूसा को जिस प्रकार आज्ञा दी थी ठीक उसी समान" उसने काम किया (38:22, 23)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के घर का निर्माण करना (35:1-36:7)

निर्गमन 25 से लेकर इस पुस्तक के अन्त तक इस्राएल का कार्य यह था कि वे पवित्रस्थान का निर्माण करें - अर्थात परमेश्वर के घर का निर्माण करना जो उसका निवास-स्थान है। इसी प्रकार वर्तमान में मसीही व्यक्ति का काम यह नहीं है कि वह खेती करे, चीज़ों की बिक्री करे, विद्यालय में पढ़ाए अथवा जीविका के लिए अन्य कार्य करे। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह कलीसिया का निर्माण करे (इफि. 4:11, 12; 1 कुरि. 3:9, 10), जो कि परमेश्वर का निवास-स्थान है (1 कुरि. 3:16) - उसका घर है (1 तीमु. 3:15), उसका मन्दिर है (इफि. 2:19-22)।

परमेश्वर के घर का निर्माण करने में हम किस प्रकार सफ़लता प्राप्त कर सकते हैं? परमेश्वर के लोगों के उदाहरण के अनुसार चलने के द्वारा जिन्होंने पवित्रस्थान का निर्माण सफलतापूर्वक किया। वे सफ़ल हुए क्योंकि उनमें से अनेक लोगों के पास "हृदय की तैयारी थी" (35:5)। हृदय की तैयारी उसी प्रकार वर्तमान में कलीसिया-निर्माण और कलीसिया विकास की कुँजी है। हृदय की तैयारी ने पवित्रस्थान के निर्माण के लिए इस्राएलियों की अगुवाई की जिससे वे भेंटें ला सकें। उनके द्वारा लायी गई भेंटें हमारे लिए चार प्रकार से एक उदाहरण है।

उन्होंने स्वेच्छा से दिया। परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को "हृदय की तैयारी" के साथ बुलाया जिससे वे "परमेश्वर के लिए भेंट के रुप में कुछ लेकर आएँ: सोना, चाँदी और पीतल" (35:5)। परमेश्वर उनके आगे और भी वस्तुओं को सूचीबद्ध करता चला गया जो लोग ला सकते थे (35:6, 7)। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक था कि वह चाहे स्त्री हो या पुरुष, जो कुछ भी उसके पास हो वह लेकर आएँ जिससे पवित्रस्थान के निर्माण में उसका प्रयोग किया जा सके। लोगों ने सब कुछ एकत्रित कर लिया।

जिस इच्छा के साथ इस्राएल के लोग भेंटें लेकर आए वह प्रभावशाली है। यह पाठ्य उनके हृदय की तैयारी के साथ उदारता का गुण बताता है और कहता है कि वे बार-बार भेंटें लाते गए और ऐसा उन्होंने इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें ऐसा करना था परन्तु उनकी आत्मा ने उन्हें ऐसा करने के लिए उन्हें प्रेरित किया

(35:21, 22, 26, 29)।

देने के विषय में वे एक हो गए। इस कार्य में लोगों के शामिल होने का स्तर प्रभावित करने वाला है। कुछ लोगों के द्वारा भेंटें नहीं लायी गयी परन्तु अनेक लोगों के द्वारा लायी गयी। यहाँ पर पाठ्य "सब" लोगों के शामिल होने पर बल देता है। देने वाले लोगों की सूची में वे लोग थे "जिनके हृदय ने ऐसा करने के लिए उन्हें प्रेरित किया" (35:21), "वे लोग जिनके हृदय ने प्रेरित किया और उनमें स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही थे" (35:22), "प्रत्येक वह पुरुष जिसके पास नीले, बैंजनी या लाल रंग की सामग्री थी" (35:23), "प्रत्येक वह व्यक्ति जो चाँदी की भेंट ला सकता था" (35:24), "सब कुशल स्त्रियाँ" (35:25), "बुद्धि का प्रकाश पायी हुई सब स्त्रियाँ" (35:26), "प्रधान लोग" (35:27), और "वे इस्राएली लोग जिनमें स्त्रियाँ और पुरुष थे जो अपने हृदय में प्रेरणा प्राप्त करके भेंट लेकर आए" (35:29)।

उन्होंने हर्ष से दिया। भेंटों की विभिन्नता भी प्रभावशाली थी। किसी ने सोना दिया तो किसी ने चाँदी अथवा पीतल दिया। कुछ लोगों ने जैसा उनके पास था उस प्रकार कपड़ा या चमड़ा या बबूल की लकड़ी दी। कुछ लोगों ने मूल्यवान अथवा कुछ कम मूल्यवान पत्थर, सुगन्धद्रव्य अथवा तेल दिया। कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने सूत कातने का गुण दिया था और उन्होंने उस गुण का प्रयोग किया जिसकी आवश्यकता तम्बू के निर्माण के लिए थी। प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी योग्यता के अनुसार दिया जैसा उनके हृदय ने उन्हें प्रेरित किया।

उन्होंने उदारता से दिया। इस्राएली लोगों के द्वारा जिस मात्रा में दिया गया वह विशेष रूप से प्रभावशाली है। निर्गमन 36:2-7 कहता है कि लोग तब तक भेंटें लाते रहे जब तक वास्तविक निर्माण कार्य करने वाले लोगों के पास निर्माण के लिए समय न बचा। लोग जो भेंटे लेकर आ रहे थे उन्हें स्वीकार करने में ही उनका समय जा रहा था। अन्त में काम करने वाले लोगों ने इस समस्या के बारे में मूसा से बात की और मूसा को लोगों से कहना पड़ा कि अब वे भेंटें लाना बन्द कर दें। उनका भेंटें दिया जाना इतना उदारपूर्ण था कि उनसे कहना पड़ा कि वे अब बस करें! उनकी उदारता बाद में दिए गए वर्णन से स्पष्ट होती जो यह बताती है कि पवित्रस्थान के निर्माण के लिए कितना दिया गया और कितना काम में आया (38:21-31)।

निष्कर्ष। वर्तमान में अगर कलीसिया को बढ़ते हुए देखने की इच्छा हम रखते हैं - कि यह आत्मिक और संख्यात्मक रुप से बड़े - तो इसके लिए आवश्यक है कि कलीसिया के सदस्य उदारता से देने की इच्छा रखें। परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम उसी प्रकार दें जिस प्रकार इस्राएली लोगों ने किया। वह चाहता है कि हम हृदय की तैयारी से, स्वेच्छा से दें (2 कुरि. 9:7)। वह हम सबसे चाहता है कि हम भेंटे चढ़ाएँ (1 कुरि. 16:1, 2); भेंटें चढ़ाना कुछ ऐसा नहीं है कि यह मात्र उन लोगों के द्वारा ही किया जाए जिनके पास बहुत अधिक धन है। प्रत्येक व्यक्ति भेंट दे सकता है और प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह भेंट दे। परमेश्वर हमसे चाहता है कि हमारे पास जो कुछ भी है उसमें से हम दें; प्रत्येक जन "अपनी आमदनी में

से" दे (1 कुरि. 16:2)। लूका 21:1-4 में विधवा के द्वारा दो दमड़ियाँ हृदय की तैयारी से बलिदान के साथ दी गई थीं, परमेश्वर के लिए उसी प्रकार मूल्यवान थी जिस प्रकार धनवान लोगों की बड़ी भेंटें थी। चाहे वह भेंट कुछ रोटियाँ हों जिससे यीशु उन्हें गुणात्मक रुप से बढ़ा दे, उसकी सवारी के लिए गधा हो अथवा उसका अभिषेक करने के लिए मूल्यवान इत्र की शीशी हो, परमेश्वर उन सब भेंटों से प्रसन्न होता है जो हम उसे चढ़ा सकते हैं। प्रत्येक सदस्य को चाहिए कि वह कलीसिया के निर्माण के लिए स्वतन्त्र रुप से और उदारता से दे।

जिस प्रकार का देना परमेश्वर के द्वारा प्रमाणित किया गया है वह यह है कि स्वेच्छा से, उदारता से, स्वतन्त्रता से बलिदान के साथ दिया जाए। कंजूस लोग जिस प्रकार देते हैं उस प्रकार अगर हमने कुछ दिया है तो इस पर विचार करें। इसके स्थान पर हम अपनी भेंटों की तुलना उन उदार भेंटों के साथ करें जिनके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं। परमेश्वर ने अपना पुत्र दिया (यूहन्ना 3:16)। यीशु ने स्वर्ग छोड़ दिया, इस पृथ्वी पर आया और अपना प्राण दिया (देखें 2 कुरि. 8:9; 9:15)। ज्योतिषियों ने यीशु को मूल्यवान भेंटें चढ़ाई (मत्ती 2:11)। मरियम ने मूल्यवान इत्र से यीशु का अभिषेक किया (यूहन्ना 12:3)। आरम्भिक मसीही लोगों ने अपना सब-कुछ बेच दिया जिससे अन्य लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके (प्रेरितों 2:44, 45)। मकिदुनियाई कलीसियाओं की उदारता देखने योग्य है (2 कुरि. 8:1-5)। फ़िर हमारे पास इस्राएलियों का उदाहरण है जिन्हें "और अधिक लाने से रोका गया" (निर्गमन 36:6)।

इन उदाहरणों के साथ हमारे द्वारा दी जाने वाली भेंटों की तुलना कितनी की जा सकती है? क्या हम उदारता से देते हैं जैसा इस्राएलियों ने और अन्य लोगों ने किया जिनकी कहानियाँ बाइबल में पायी जाती है? क्या हमें उनसे बढ़कर और अधिक देने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए? अपने कामों को निपटाने के लिए शैतान के पास बहुत धन है। प्रश्न यह है कि क्या परमेश्वर की कलीसिया के पास पर्याप्त धन है जिससे इसके काम निपटाए जा सकें? क्या हम कलीसिया के निर्माण के लिए उदारता के साथ देना चाहेंगे?

परमेश्वर के लोगों के पास हृदय की तैयारी थी (35:5)

निर्गमन में अन्य पदों के समान अध्याय 35 में बाइबल यह साक्ष्य उपलब्ध करवाती है कि इस्राएली धर्म में लोगों का हृदय, मन और व्यवहार शामिल था। वास्तव में जब पवित्रस्थान के निर्माण का समय आया तब परमेश्वर ने जो किया था उसके लिए लोग अपने हृदय में इतने धन्यवाद से भरे हुए थे कि इसके निर्माण के लिए उन्होंने मन से उदारता के साथ दिया। नया नियम धर्म भी "मन से देने वाला" बने (रोमियों 6:17, 18)। अब जैसा उस समय था, परमेश्वर अपने बच्चों से ऐसा नहीं चाहता कि वे मात्र भावनाओं में बहकर कुछ करें; वह हमसे चाहता है कि हम जो कुछ करें हृदय से करें।

समाप्ति नोट्स

[1]इस भाग में, सेप्ट्यूएजिंट का लेख इब्रानी लेख से बिल्कुल अलग है। इब्रानी लेख की श्रेष्ठता को सही ठहराए जाने के लिये, देखें विल्बर फील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मो.: कॉलेज प्रेस, 1976), 769-72. [2]अम्बर्टो कैसुटो, *अ कॉमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ एक्सोडस,* ट्रांस. इज़राएल एब्राहम्स (जेरूशलेम: मैग्नेस प्रेस, 1997), 453. [3]पीटर एन्स, *एक्सोडस*, दि एनआईवी एप्लीकेशन कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवन, 2000), 546. [4]कैसुटो, 456. [5]जो लोग इन दो [कुशल कारीगरों] के साथ काम करने वाले थे उन्हें "सहायकों को प्रशिक्षण देने और दिशा-निर्देश देने की योग्यता" दी गई। (वॉल्टर सी. कैसर, जुनियर., "एक्सोडस," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, जेनेसिस-नम्बर्स [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1990], 490.)